प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में विदुषी महिलाएं

19

डॉ समन जहरा जैदी

सारांश

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे समृद्ध और प्राचीन बौद्धिक परंपराओं में से एक है, जिसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा, दर्शन और धार्मिक अनुष्ठानों में समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, घोषा और अपाला जैसी विदुषी महिलाओं ने न केवल वेदों और उपनिषदों में योगदान दिया, बल्कि दार्शनिक विमर्श को भी समृद्ध किया। इस शोध–पत्र में प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की बौद्धिक भूमिका, उनकी शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा उनके योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः *विदुषी महिलाएं, वैदिक काल, स्त्री शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन।*

भारतीय सभ्यता का विकास ज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिक चिंतन पर आधारित रहा है। प्राचीन भारत में ज्ञान केवल पुरुषों तक सीमित नहीं था, बल्कि महिलाओं को भी इसमें समान अवसर प्राप्त थे। वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर यह उल्लेख मिलता है कि महिलाएं न केवल शिक्षित थीं, बल्कि वे शास्त्रार्थ, यज्ञ और दार्शनिक चिंतन में भी भाग लेती थीं। यह तथ्य आधुनिक समाज के लिए भी प्रेरणादायक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, स्मृतियां, पुराण और दर्शनशास्त्र हैं। इस परंपरा की विशेषताएंः मौखिक परंपरा, गुरु–शिष्य संबंध, समग्र ज्ञान आध्यात्मिक और भौतिक संतुलन है। इस परंपरा में स्त्रियों को भी समान रूप से भाग लेने का अवसर मिला। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वे वेदों का अध्ययन करती थीं और उनका उपनयन संस्कार भी होता था।[1] इस समय ब्रह्मवादिनी और सद्यःवधू स्त्रियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया थाः ब्रह्मवादिनी – जो जीवनभर ज्ञान की साधना करती थीं। सद्यःवधू – जो विवाह के बाद गृहस्थ जीवन अपनाती थीं।[2]

डॉ समन जहरा जैदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जी एफ कॉलेज, शाहजहांपुर
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB356-A26. Ch.19
Book Name : भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक विज्ञान
Plagiarism Report: 07%

वैदिक काल (1500–600 ई.पू.) भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम युग था, जिसमें महिलाओं को शिक्षा, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इस काल में अनेक महिलाएं ऋषिका (महिला ऋषि) के रूप में प्रतिशिठत थीं, जिन्होंने वेदों के सूक्तों की रचना की और दार्शनिक विचारों को समृद्ध किया। जिसमें गार्गी वाचक्नवी वैदिक काल की सबसे प्रसिद्ध विदुषी महिलाओं में से एक थीं। वे एक महान दार्शनिक और ब्रह्मवादिनी थीं। गार्गी ने बृहदारण्यक उपनिषद में राजा जनक के दरबार में आयोजित शास्त्रार्थ में भाग लिया। उन्होंने याज्ञवल्क्य से ब्रह्म के स्वरूप पर गहन प्रश्न किए। उनका प्रश्न था कि "यह ब्रह्मांड किस तत्व पर आधारित है?" वे तर्कशक्ति और दार्शनिक दृष्टि के लिए प्रसिद्ध थीं। गार्गी का योगदान यह दर्शाता है कि महिलाओं को उच्च स्तर के दार्शनिक विमर्श में भाग लेने की स्वतंत्रता थी।[3] मैत्रेयी वैदिक काल की एक महान दार्शनिक और याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं। वे ज्ञान और आत्मा के विषय में गहरी रुचि रखती थीं। उन्होंने याज्ञवल्क्य से अमरत्व और आत्मा के स्वरूप पर प्रश्न किए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि "धन से अमरत्व प्राप्त नहीं किया जा सकता।" उनका संवाद बृहदारण्यक उपनिषद में अत्यंत प्रसिद्ध है। मैत्रेयी का चिंतन आध्यात्मिक ज्ञान की श्रेष्ठता को दर्शाता है।[4]

लोपामुद्रा भी इस काल की एक प्रमुख ऋषिका थीं और महर्षि अगस्त्य की पत्नी थीं। उन्होंने ऋग्वेद में सूक्तों की रचना की। उनके सूक्तों में भावनात्मक और दार्शनिक दोनों तत्व मिलते हैं। उन्होंने गृहस्थ जीवन और आध्यात्मिकता में संतुलन को दर्शाया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री बौद्धिक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर सशक्त हो सकती है।[5]

घोषा वैदिक काल की एक प्रसिद्ध ऋषिका थीं, जिन्होंने ऋग्वेद में सूक्तों की रचना की। उन्होंने अश्विन देवताओं की स्तुति में सूक्त लिखे। उनके सूक्तों में स्वास्थ्य, रोग और उपचार का उल्लेख मिलता है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों को भी व्यक्त किया। घोषा का योगदान वैदिक चिकित्सा और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।[6]

अपाला एक प्रमुख ऋषिका थीं, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। उन्होंने अपने जीवन की कठिनाइयों और रोग से संबंधित अनुभवों को सूक्तों में व्यक्त किया। उन्होंने इंद्र से स्वास्थ्य और सौंदर्य की प्रार्थना की। अपाला का योगदान यह दर्शाता है कि वैदिक साहित्य में व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया गया था।[7]

विश्ववारा भी एक विदुषी ऋषिका थीं, जिन्होंने ऋग्वेद में सूक्तों की रचना की। उन्होंने देवताओं की स्तुति में सूक्त लिखे। उनके सूक्तों में आध्यात्मिकता और नैतिकता का समन्वय मिलता है। वे वैदिक ज्ञान परंपरा में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रमाण हैं।[8]

इन विदुषी महिलाओं के अध्ययन से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं कि महिलाओं को वेदों का अध्ययन करने का अधिकार था, वे गहन दार्शनिक प्रश्न उठाने में सक्षम

थीं, उन्होंने ऋग्वेद में सूक्तों की रचना की तथा समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। इस प्रकार वैदिक काल की विदुषी महिलाएं भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला थीं। उन्होंने न केवल ज्ञान का सृजन किया, बल्कि समाज को बौद्धिक दिशा भी दी।

किन्तु समय आगे बढ़ा और उत्तरवैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई जिसका कारण पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विकास, शिक्षा पर प्रतिबंध तथा सामाजिक रूढ़ियां थी किन्तु कालांतर में जैन और बौद्ध धर्म के उदय के साथ हमें अनेक विदुषी महिलाओं की जानकारी मिलती है यद्यपि प्रारंभ में गौतम बुद्ध ने संघ में महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया किन्तु अपनी माता महाप्रजापती गौतमी के आग्रह और शिष्य आनंद के निवेदन पर उन्होंने महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दी।[9]

यह घटना बौद्ध इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, क्योंकि इससे पहली बार महिलाओं को संगठित धार्मिक जीवन में स्थान मिला। महिलाओं के लिए भिक्षुणी संघ की स्थापना की गई, जिससे वे भी पुरुषों की तरह संन्यास जीवन अपना सकें। इससे महिलाओं को आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला,वे निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त कर सकती थीं उन्होंने धर्म प्रचार में सक्रिय भूमिका निभाई। प्रमुख विदुषी महिलाओं में महाप्रजापती गौतमी, अंबपाली, शुभा, अनुपमा, सुमेधा आदि के नाम मिलते हैं। इन महिलाओं ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में महत्वपूण्र भूमिका निभाई।[10] इस प्रकार बौद्ध धर्म ने महिलाओं की स्थिति में कई सकारात्मक परिवर्तन किए जैसे शिक्षा के अवसर बढ़े, सामाजिक बंधनों में कमी आई तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई किन्तु फिर भी समाज की पारंपरिक सोच के कारण पूर्ण स्वतंत्रता स्थापित नहीं हो सकीं और कुछ सीमाएं बनी रही फिर भी यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म ने महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कदम उठाया।

जैन धर्म में भी महिलाओं को साध्वी बनने का अधिकार था। उन्होंने तप, ज्ञान और धर्म प्रचार में योगदान दिया।[11] भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनशील रही है। विभिन्न धर्मों और दार्शनिक परंपराओं ने महिलाओं को अलग–अलग दृष्टिकोण से देखा है। जैन धर्म, जिसकी स्थापना महावीर स्वामी द्वारा मानी जाती है, महिलाओं के प्रति अपेक्षाकृत उदार दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

जैन धर्म का मूल सिद्धांत है कि प्रत्येक जीव में आत्मा होती है और सभी आत्माएँ समान होती हैं। यह सिद्धांत महिलाओं को आध्यात्मिक समानता प्रदान करता है।[12] जैन दर्शन में आत्मा (जीव) को शाश्वत और समान माना गया है। स्त्री और पुरुष दोनों में आत्मा समान होती है। मोक्ष प्राप्ति का अधिकार सभी को है। यह विचार उस समय के अन्य धर्मों की तुलना में अधिक प्रगतिशील था।[13] जैन धर्म में कर्म सिद्धांत के अनुसार जन्म का आधार कर्म होता है, न कि लिंग इसलिए महिला

होना आध्यात्मिक उन्नति में बाधा नहीं माना गया। दिगंबर संप्रदाय के अनुसार महिलाओं को मोक्ष प्राप्ति के लिए पुरुष जन्म लेना आवश्यक है। निर्वस्त्र तप (दिगंबर अवस्था) महिलाओं के लिए संभव नहीं। यह दृष्टिकोण महिलाओं की आध्यात्मिक क्षमता को सीमित करता है।[14]

जबकि श्वेतांबर संप्रदाय अधिक उदार दृष्टिकोण अपनाता है जिसमें महिलाओं को मोक्ष प्राप्ति का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है मल्लिनाथ को महिला तीर्थंकर माना जाता है। यह मत महिलाओं की आध्यात्मिक समानता को स्वीकार करता है।[15] जैन धर्म में महिलाओं को साध्वी बनने का अवसर प्राप्त है। चंदना को प्रथम महिला शिष्या माना जाता है। साध्वियाँ कठोर नियमों का पालन करती थी। वे तप, संयम और ब्रह्मचर्य का पालन करती थी।

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो कई कालों में साध्वियों की संख्या साधुओं से अधिक रही है, जो महिलाओं की सक्रिय धार्मिक भागीदारी को दर्शाता है।[16] जैन समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है हालांकि, सामाजिक संरचना में कुछ सीमाएँ भी थीं, जैसे विवाह और परिवार केंद्रित जीवन, सार्वजनिक जीवन में सीमित भागीदारी फिर भी अन्य समकालीन समाजों की तुलना में उनकी स्थिति बेहतर थी।[17] जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया गया। वे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करती थीं। वे नैतिक और धार्मिक शिक्षा का प्रचार करती थीं अहिंसा और अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों के प्रचार में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

इस प्रकार, जैन धर्म पूर्णतः समानतावादी नहीं था, लेकिन अपने समय के अन्य धर्मों की तुलना में अधिक प्रगतिशील था जैन धर्म में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत उन्नत रही है।यह धर्म महिलाओं को आध्यात्मिक उन्नति के अवसर प्रदान करता है और उन्हें धार्मिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने की अनुमति देता है। संप्रदायगत मतभेदों के बावजूद, जैन धर्म महिलाओं के प्रति एक सकारात्मक और सम्मानजनक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में विदुषी महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने ज्ञान, दर्शन और समाज को नई दिशा दी। आज आवश्यकता है कि उनके योगदान को पुनः पहचान कर समाज में समानता और शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद 10.85
2. Altekar, AS - The Position of women in Hindu civilization, Delhi – 2021, Pg. 45
3. बृहदारण्यक उपनिषद–3.6
4. बृहदारण्यक उपनिषद् – 2.4

5. ऋग्वेद –1.179
6. वहीं 10.39–40
7. वहीं 8.91
8. वहीं 5.28
9. विनय पिटक – कुल्लबग्ग, अध्याय 10
10. Thapar, Romila - Early India - 2002 Pg. 120
11. Chakravarti, Uma - Gendering caste, Calcutta-2003, Pg. 67
12. A.S. Altekar, The Position of Women in Hindu Civilization, Motilal Banarsidass, 1956, Pg. 123–125.
13. Padmanabh S. Jaini, Gender and Salvation: Jaina Debates on the Spiritual Liberation of Women, University of California Press, 1991, Pg. 41–47.
14. Ibid., pp. 48–52.
15. Romila Thapar, Early India: From the Origins to AD 1300, Penguin Books, 2002, Pg. 215–218.
16. Paul Dundas, The Jains, Routledge, 2002, Pg. 89–94.
17. Uma Chakravarti, Gendering Caste, Stree Publications, 2003, Pg. 95–102.